10

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

C

Sr. No. of Question Paper : 4138

Unique Paper Code : 12057503

Name of the Paper : अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य

Name of the Course : B.A. (H) Hindi, CBCS, DSE-I

Semester : V

Duration : 3 Hours

Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. भारतीय संदर्भ में स्त्री मुक्ति आंदोलन पर प्रकाश डालिए।

अथवा

आदिवासी विमर्श की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए उनके आंदोलनों के विभिन्न कारणों को रेखांकित कीजिए। (15)

2. किन्हीं तीन अंशों की व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) लोहा काला होता है, इस वास्ते लोहे का यह जमाना कलूकाल

P.T.O.

है। फिरंगियों के जादूचाला से तुम्हारी मति इस भेद को पल्ले नहीं पालती कि उनके लिए लोहा ताकत है और तुम्हारे लिए 'कालाकाल' तुम समझो और भेद पाओ कि कलूकाल तुम्हारे लिए अंधेरा है। मैं तुम्हें अक्ल की विद्या सिखा कर जादूगरों के फैलाये अंधेरे से उबारने के वास्ते धरती पर परगट हुआ हूँ। इसके बाहर मेरा कोई मंसूबा नहीं है। तुम सब गुझ साध सैंगाजी की सीख पर नहीं चलोगे तो गारत में जाओगे।

अथवा

एक तरफ संबंध मोहब्बत की पुख्ता जमीन पर खड़ा हो रहा है, तो दूसरी ओर आत्म-सम्मान, तर्क की छेनी-हथौड़ी से संवेदना पर प्रहार कर उसे व्यथा के समंदर में धकेल रहा है। दिल कह रहा है कि आज की खूबसूरती जी लो, प्यार को दोनों हाथों की अंजुली में भरकर पी लो, न ज़ुबैर को निराश करो, न खुद को दु:खी, मगर चेतना उसे रोक रही है-भावना में मत बहो, ऐसी हज़ार हसीन रातें आएंगी, ज़रा इंतजार करो। आज के सुख के लिए कल का समझौता बहुत महंगा पड़ेगा, जहाँ दर्द के गलियारों में भटकन होगी। एबादत का सूरज बीच में ही डूब जाएगा। सारी रातें सियाह पड़ जाएँगी।

(ख) काली छाया-सी डोलती
सात भाइयों के बीच
चम्पा सयानी हुई।
ओखल में धान के साथ

कूट दी गई
भूसी के साथ कूड़े पर
फेंक दी गई।
वहां अमरबेल बन उगी।
झरबेरी के साथ कंटीली झाड़ों के बीच
चंपा अमरबेल बन सयानी हुई
फिर से घर आ धमकी।

अथवा

मारे थानेदरवा बोलाइ घरवा से हमें,
झूठइ बनावें गुनहगार।
जेलवा में मलवा उठावै मजबूर करें,
केउ नहिं सुनत गोहार।
देसवा अजाद अहै हम तो गुलमवां,
हमरे लिये न सरकार।
ऐसन कौनउ जुगुति लगावा भइया 'मितई'
हमरउ करावा उरधार।

(ग) इस्तीफे के बाद डॉ अंबेडकर ने कहा था कि जो योगदान वे भारतीय संविधान लिखकर नहीं कर पाए थे, उसे वे हिंदू कोड बिल के माध्यम से पूरा करना चाहते थे। इन तमाम जानकारियों के बाद स्वामी करपात्री जी के प्रति सातवें दर्जे में पढ़ते हुए जो अगाध श्रद्धा जागी थी, वह यकायक चकनाचूर हो गई। स्वामी करपात्री जी के बाद 'जनसंघ' पार्टी के उम्मीदवार ने,

जो रानीपुर इंटर कॉलेज के प्रिंसिपल थे, हमारे स्कूल में एक सभा की। वे बार-बार राणा प्रताप तथा रानी लक्ष्मीबाई का गुणगान करते हुए भाषण देने लगे। हमें उनकी बातें बड़ी उबाऊ सी लगती थीं।

अथवा

स्त्री के जीवन की अनेक विवशताओं में प्रधान और कदाचित उसे सबसे अधिक जड़ बनाने वाली अर्थ से संबंध रखती है और रखती रहेगी, क्योंकि वह सामाजिक प्राणी की अनिवार्य आवश्यकता है। अर्थ का प्रश्न केवल उसी के जीवन से संबंध रखता है, यह धारणा भ्रान्ति-मूलक है। जहाँ तक सामाजिक प्राणी का संबंध है, स्त्री उतनी ही अधिक अधिकार-सम्पन्न है, जितना पुरुष; चाहे वह अपने अधिकारों का उपयोग करे या न करे। समाज न उनके उपयोग का मूल्य घटा सकता है और न बढ़ा सकता है, परन्तु उन बंधनों में कुछ ऐसे भी हो सकते हैं, जो केवल उसके लिए हीं नहीं, वरन सबके लिए घातक सिद्ध होंगे।

3. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखो : (10×3=30)

(क) 'सलाम' कहानी में दलित चेतना

(ख) लिंगभेद

(ग) आदिवासी और पहचान का सवाल

(घ) क्रांतिवीर मदारी पासी-अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष

(ङ) निर्मला पुतुल की कविता का स्वर

(च) अन्या से अनन्या तक में नारी चेतना का स्वर